2. ह्यूम *(Hume)*

कारण की आधुनिक धारणा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रभावित हैं जो 'कारण' को सिर्फ कारण (Cause) के अर्थ में लेती है, हेतु (Reason) के अर्थ में नहीं। इसके अनुसार समय की दृष्टि से पहले आने वाली घटना जिससे कोई अन्य घटना उत्पन्न मानी जाती है उस अन्य घटना का कारण कहलाती है। किसी घटना के पूर्व आने वाली तो अनेकों घटनाएँ होती हैं, परन्तु उसके कारण के रूप में सिर्फ उसी पूर्ववर्ती घटना को लिया जाता है जिससे उस घटना को उत्पन्न समझा जाता है और ऐसा माना जाता है कि भविष्य में जब वह पूर्ववर्ती घटना उत्पन्न होगी। कारणता की इस धारणा में तीन बातें निहित हैं :—

(i) कारण पूर्ववर्ती होता है (यदि क ख का कारण है तो क ख के पहले आता है),

(ii) कारण से कार्य उतपन्न होता है तथा

(iii) कारण की उपस्थिति से कार्य जरूर उत्पन्न होता है।

कारण-संबंधी उपर्युक्त तीसरी बात को कारण-कार्य नियम (Law of causation) की संज्ञा दी जाती है और सारे वैज्ञानिक सामान्यीकरणों (Scientific generalisations) को इसी पर आधारित माना जाता है। इस नियम का पूर्ण अर्थ यह है कि समान कारण से बराबर समान कार्य ही पैदा होता है। घर्षण से यदि आज गर्मी पैदा होती है तो बराबर दी घर्षण से गर्मी पैदा होगी। उसी प्रकार आज यदि पानी से प्यास बुझती है तो आगे भी ऐसा ही होगा। जिस कारण से जो कार्य आज पैदा होता है उस कारण से भविष्य में भी वही कार्य पैदा होगा।

Scanned by TapScanner

किसी कार्य के कारण होने का यही अर्थ है कि दोनों में एक अनिवार्य संबंध (Necessary connection) हो, ताकि एक यदि कहीं उपस्थित हो तो उसके तुरंत बाद दूसरी भी उपस्थित होगी ही। ऐसा सोचा ही नहीं जा सकता कि कारण उपस्थित होगा और कार्य उत्पन्न नहीं होगा। सारे वैज्ञानिक नियम जिनकी सार्वभौमिकता तथा निश्चितता में हम विश्वास करते हैं वस्तुतः कारण-कार्य संबंधी इसी अवधारणा पर आधारित है कि कारण तथा कार्य के बीच एक अनिवार्य संबंध होता है। कारण उसे कहते हैं जिसकी उपस्थिति में कार्य अनिवार्य रूप में उत्पन्न होता है। यदि 'क' 'ख' का कारण है तो इसका अर्थ है कि 'क' के होने से 'ख' भी अनिवार्य रूप से होगा।

ह्यूम ने कारण-कार्य संबंध की इस अनिवार्यता की तीव्र आलोचना की। उन्होंने बतलाया कि कारण तथा कार्य के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं है। 'अनिवार्य संबंध' आखिर किसे कहते हैं ? शायद कारण-कार्य के बीच अनिवार्य संबंध माननेवालों की राय में दोनों के बीच ऐसा संबंध इस अर्थ में है कि एक की उपस्थिति में दूसरे की अनपूस्थिति मान लेने से एक आत्म-विरोध पैदा हो जाता है। पानी है और प्यास नहीं बुझती है, आग है और जलाने की शक्ति नहीं है ये बातें आत्म-विरोधी हैं। कारण जहाँ भी होगा कार्य होगा ही। उसका नहीं होना सोचा ही नहीं जा सकता। परन्तु *ह्यूम* ने बतलाया कि कारण तथा कार्य में ऐसा कोई संबंध नहीं है। पानी है और उसमें प्यास बुझाने की शक्ति नहीं है, इसमें आत्म-विरोध कहाँ है ? उसी प्रकार घर्षण है परन्तु गर्मी पैदा नहीं होती, आर्सेनिक है, परन्तु मृत्यु नहीं होती, इसमें आत्म विरोध कहाँ है ? यह बात ठीक है कि वास्तविकता में ऐसा अबतक नहीं पाया गया है कि पानी हो और प्यास बुझाने की शक्ति नहीं हो, आर्सेनिक हो और उसमें मृत्यु पैदा करने की शक्ति नहीं हो, परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि भविष्य में भी ऐसा अनिवार्य रूप में होता रहेगा और हम इनके विरोधी उदाहरणों के विषय में सोच भी नहीं सकते। इनके विरोधी उदाहरणों को सोचने पर बौद्धिक अथवा तार्किक स्तर पर कोई आत्म-विरोध पैदा नहीं होता।

फिर एक दूसरी दृष्टि से भी हम कारण तथा कार्य के बीच किसी अनिवार्य संबंध की बात नहीं कर सकते। हम यह भी नहीं कह सकते कि कारण में एक शक्ति होती है जो अनिवार्य रूप से कार्य को पैदा करती है और उसके नहीं पैदा होने को कोई प्रश्न ही नहीं है, चूँकि कारण से किसी ऐसी शक्ति के निकलकर कार्य में प्रवेश करने की क्रिया का हमें कभी अनुभव नहीं होता। कारण-कार्य के रूप में हमें सचमुच जिस बात का प्रत्यक्ष अनुभव होता है, वह है कि नियमित पूर्वापर क्रम (Regular succession) में दो घटनाओं के लगातार संयोग या साहचर्य (Constant conjunction) का, इससे अधिक और कुछ नहीं। बराबर एक निश्चित क्रम में दो घटनाओं को एक-के-तुरंत-बाद-एक के रूप में आते देख हमें यह आदत लग जाती है कि जहाँ कहीं भी एक को देखते हैं तो सोचते हैं कि दूसरी भी अवश्य हो आयेगी। यह संयोग की बात है कि प्रत्येक बार दूसरी भी आ ही जाती है, परन्तु ऐसा होने के पीछे कोई अनिवार्यता नहीं है, वह दूसरी नहीं भी आ सकती है। जिसे हम कारण कहते हैं, और जिसे कार्य कहते हैं, वे दोनों दी बिलकुल भिन्न तथा अलग घटनाएँ हैं, दोनों में कोई आन्तरिक संबंध नहीं है। कारण-कार्य संबंध जिसे हम कहते हैं वह हमारे मन में है, वास्तविक घटना-क्रम में नहीं। दो घटनाओं को एक निश्चित अनुक्रम (Regular sequence) में बराबर साथ देखते-देखते विचारों के साहचर्य (Association of ideas) के आधार पर हम यह सोच लेते हैं कि एक के बाद दूसरी आयेगी ही। इस

Scanned by TapScanner

प्रकार से सोचने की हमारी एक आदत बन जाती है और इसलिये कारण-कार्य के बीच अनिवार्य संबंध की धारणा मात्र मानसिक है, वास्तविकता में कारण-कार्य में ऐसा कोई संबंध वस्तुनिष्ठ रूप में है नहीं। इस प्रकार *ह्यूम* के अनुसार 'क' 'ख' का कारण है का अर्थ सिर्फ इतना है कि 'क' तथा 'ख' एक निश्चित पूर्वापर क्रम में बराबर एक साथ आते हैं यानी 'क' पहले आता है और 'ख' उसके तुरंत बाद। यदि 'क' कभी 'ख' से पहले आता है और कभी नहीं, तो फिर वह 'ख' का कारण नहीं है और फिर 'क' 'ख' का कारण है, का मतलब यह भी नहीं है कि 'क' तथा 'ख' में कोई अनिवार्य संबंध है ताकि 'क' के उपस्थित होने पर 'ख' आएगा ही।

उपर्युक्त विचेन के आधार पर यह स्पष्ट है कि *ह्यूम* के अनुसार कारणता नियत साहचर्य (Constant conjunction) है। दूसरे शब्दों में, यह कहने का तात्पर्य कि 'क' 'ख' का कारण है, यह है कि 'क' का 'ख' के साथ नियत साहचर्य है अर्थात् जब भी 'क' घटित होता है तो उसके पश्चात नियमित रूप से 'ख' भी घटित होता है। 'क' के घटित होने से 'ख' के घटित होने में कोई अनिवार्यता नहीं है, परन्तु वास्तविक अनुभव में सदैव यह पाया जाता रहा है कि 'क' के घटित होने के तुरंत बाद 'ख' भी घटित होता है। इस दृष्टि से कारणता को नियमित अनुक्रमता (Regularity of sequence) की संज्ञा भी दी जा सकती है चूँकि कारण और कार्य में यहाँ एक निश्चित या नियमित पूर्वापरता पाई जाती है। इन बातों से यह स्पष्ट है कि *ह्यूम* के अनुसार 'क' को 'ख' का कारण कहे जाने के लिए दो बातें आवयक हैं :—

(i) 'क' 'ख' के पहले घटित हो तथा

(ii) 'क' तथा 'ख' के घटित होने में एक नियमित अनुक्रमता या पूर्वापरता हो।

उपर्युक्त बातों से ही एक और बात स्पष्ट है और वह यह कि *ह्यूम* के अनुसार कारणती की अवधारणा अनुभव निरपेक्ष (a priori) अवधारणा नहीं है। अनुभव के पूर्व हम यह नहीं जानते कि कौन घटना किस अन्य घटना का कारण है अथवा यों कहें कि किसी घटना को किसी अन्या घटना का कारण कहने का क्या अर्थ होता है। जब कई बार अनुभव में दो घटनाओं को नियत साहचर्य या निहमित पूर्वापरता के संबंध में बँधे हम देखते हैं तभी उनमें से पहले अपने वाले को कारण की संज्ञा देते हैं। इस प्रकार कारणती की अवधारण एक अनुभवाश्रित (a posteriori) अवधारणा है, अनुभवनिरपेक्ष (a priori) नहीं। *ह्यूम* ने इस संबंध में स्पष्ट कहा हैं – *"There are not objects which by the mere survey, without consulting experience, we can determine to be the causes fo any other, and no objects, which we can certainly determine in the same manner not to be the causes."* *अर्थात् ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसके संबंध में बिना अनुभव का सहारा लिए हम कह सकते हैं कि वह किसी दूसरी वस्तु का कारण है या नहीं है, अर्थात् अनुभव ही हमें यह बतलाता है कि किस वस्तु का क्या कारण है और इस प्रकार अनुभव ही कारणता की अवधारण से हमें अवगत कराता है।*

Scanned by TapScanner